20

व्यक्तित्व निर्धारणः आनुवंशिकता और पर्यावरण की भूमिका

* बी.डी. पाण्डे

प्रस्तावना

ज्यों–ज्यों सामाजिक जीवन अपेक्षाकृत अधिक जटिल होता जाता है, व्यक्तित्व के महत्व में वृद्धि होती है। एक जटिल समाज में एक सुखद, मनोहर व्यक्तित्व का विक्रय मूल्य, महत्व होता है तथा उसे अधिक परिष्कृत कर उसकी तलाश की जाती है। व्यक्तित्व शब्द लैटिन शब्द 'पर्सोना' से लिया गया है जिसका अर्थ मुखौटा, आवरण होता है। ग्रीक के लोगों में कलाकार मंच पर अपनी पहचान छुपाने के लिए मुखौटों का प्रयोग करते थे। इस नाटकीय प्रविधि को बाद में रोम के लोगों द्वारा अपनाया गया जिनके लिए पर्सोना का अर्थ होता था ''दूसरों की दृष्टि में कोई कैसा दिखलाई पड़ता है'' 'यह नहीं की वास्तव में वह कैसा है।'

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा व्यक्तित्व की भिन्न–भिन्न परिभाषाएँ दी गयी हैं। वे व्यक्तित्व को इस प्रकार से परिभाषित करते हैं ताकि इसमें उत्प्रेरक तथ्यों के साथ ही साथ अन्य दूसरे विशिष्ट पक्षों का समावेशन हो। इन सभी परिभाषाओं में गार्डन डब्ल्यू आलपोर्ट द्वारा प्रस्तावित एक व्यापक क्षेत्र में स्वीकृत मान्यता प्राप्त, लघु पर सभी पक्षों को सम्मिलित करती हुई परिभाषा है। इनके अनुसार 'व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर उन मनोदैहिक गुणों का गत्यात्मक संगठन है जो परिवेश के प्रति होने वाले उसके अपूर्व अभियोजनों का निर्णय करते हैं।'

व्यक्तित्व विकास में आनुवंशिकता की भूमिका

व्यक्तित्व प्रतिमान व्यक्ति के आनुवंशिक प्रतिमानों पर आधारित होता है। यह घर के भीतर तथा बाहर लोगों के साथ दीर्घाकृत सामाजिक सम्बन्धों की दशा में सीखने की उत्पत्ति है। जैसाकि सैण्डर्सन ने कहा है व्यक्तित्व ग्रन्थिल स्थल या उन अनुभवों के जिन्हें विशिष्ट महत्व प्राप्त है, के चारों ओर संगठित होता है।

* डॉ. बी.डी. पाण्डे, एम जी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

गर्भधारण के समय प्रत्येक नवीन मानव आनुवंशिकता प्राप्त करता है जो उसके व्यवहार एवं जीवनपर्यन्त विकास के लिए समस्त अन्तःशक्तियों को प्रदत्त करता है। इस प्रतिभा में विशिष्ट कौशल, योग्यता, क्षमता, आचरण, व्यवहार के प्रक्रम तथा वृद्धि के प्रतिमान तथा सम्पूर्ण जीवन चक्र में परिवर्तन की शारीरिक अन्तःशक्ति सम्मिलित है।

आनुवंशिकता की प्रक्रिया

गर्भाधारण के समय स्त्री पुरुष कोषाणु गर्भधारण किए हुए डिम्ब में लगभग 46 गुणसूत्र होते हैं जिसमें माता–पिता में से प्रत्येक से आधे–आधे होते हैं। गुणसूत्र, कीटाणु की अतिलघु धागे के समान संरचना वाले होते हैं जिनमें सैकड़ों अतिसूक्ष्मदर्शी कण होते हैं जिन्हें जीन्स कहा जाता है जो एक व्यक्ति की आनुवंशिकता के वास्तविक वाहक होते हैं। इसके साथ ही गुणसूत्र, कीटाणु सम्भवतः 10 से 15 हजार जीन्स होते हैं। इसमें से एक जटिल अणु, जो हजारों अतिसूक्ष्म एक विशिष्ट व्यवस्था में निर्मित होते हैं। जीन्स कोषाणुओं की विशेषताओं को व्यक्तित्व विकास के लिए ले जाते हैं और उसकी इकाई एक प्रौढ़ के रूप में वृद्धि करने की दिशा को निर्देशित करते हैं। आनुवंशिकता में प्राप्त इस संरचना में व्यावहारिक की क्षमताएँ निहित हैं।

आनुवंशिकता की भूमिका

व्यक्तित्व का स्वरूप आंतरिक रूप से निर्धारित होता है और घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं जो व्यक्ति के आनुवंशिक विशेषताओं को निर्मित करते हैं। यद्यपि सामाजिक और अन्य पर्यावरणीय कारक भावी व्यक्तित्व के स्वरूप को प्रभावित करते हैं। यह बाहर से टपकाई हुई एवं नियंत्रित ही नहीं होती है अपितु व्यक्ति में अन्तर्निहित क्षमताओं से उद्विकसित होता है। व्यक्ति की शारीरिक संरचना एवं बुद्धि, स्वभाव आदि आनुवंशिकता के परिणाम हैं। एक व्यक्ति का विकास किस प्रकार का होगा यह पर्यावरण पर निर्भर होता है जिस में व्यक्ति विकसित होता है। व्यक्तित्व के प्रतिमान को निर्धारित करने में आनुवंशिक आधार के महत्व को अनेक आनुवंशिकर्ताओं द्वारा प्रतिबलित किया गया है। सामान्यतः यह कहा गया है कि व्यक्तित्व महत्वपूर्ण व्यक्तियों जैसे सर्वप्रथम माता, बाद में पिता एवं अन्य भाई–बहन तथा इसके बाद परिवार के अन्य सदस्यों की शिशु के साथ अन्तःक्रिया से निर्मित होता है। इस अन्तःक्रिया में शिशु की जैवकीय संरचना, अनेक आवश्यकताओं तथा बौद्धिक क्षमताएँ भी सम्मिलित हैं जो उस विधि का निर्धारण करती हैं कि उसके पर्यावरण में महत्वपूर्ण व्यक्ति उसके प्रति किस प्रकार का व्यवहार करते हैं।

अनुवाँशिकता तथा पर्यावरणीय कारकों के मध्य अन्तःक्रिया के दौरान एक व्यक्ति यह चुनाव करता है कि उसकी आवश्यकता की पूर्ति किस से होती है और इन चीजों को अस्वीकार

कर देता है जो उसकी आवश्यकता की पूर्ति योग्य नहीं है। इस प्रकार व्यक्तित्व के प्रतिमान पर्यावरण के साथ अन्तःक्रिया के माध्यम से, जिसे व्यक्ति ने स्वयं दीक्षित किया है, विकसित होता है।

व्यक्तित्व के विकास में आनुवंशिकता की भूमिका को प्रतिबलित करने का एक कारण इस बात को मान्यता प्रदान करना है कि व्यक्तित्व का प्रतिमान नियंत्रण का विषय है। एक व्यक्ति जो आनुवंशिकता में निम्न स्तर की बुद्धि प्राप्त करता है, उदाहरण के लिए सर्वाधिक अनुकूल पर्यावरण की दिशाओं में भी एक ऐसे व्यक्तित्व के प्रतिमान को विकसित नहीं कर सकता है जो उसके पर्याप्त वैयक्तिक एवं सामाजिक समायोजन में सहायक हो अपेक्षाकृत उस व्यक्ति के जिसका समायोजन का स्तर उच्च है। इस प्रकार आनुवंशिकता व्यक्ति के विकास को सीमाबद्ध करती है।

इसके अतिरिक्त आनुवंशिकता द्वारा लगायी गयी सीमाएँ इस सत्य को रेखांकित करती हैं कि व्यक्ति जैसा चाहता है, उस प्रकार के व्यक्तित्व प्रतिमान का चयन करने तथा उसे विकसित करने के लिए पूर्णरूप से स्वतंत्र नहीं है। बुद्धि को पुनः उदाहरण के रूप में प्रयोग करते हुए कहा जा सकता है कि निम्न स्तर की बुद्धि रखने वाला व्यक्ति एक नेता के व्यक्तित्व के प्रतिमान को विकसित नहीं कर सकता है यद्यपि कि वह ऐसा चाहता है और यद्यपि की उसमें एक नेतृत्व के लिए आवश्यक विशेषता से युक्त व्यक्तित्व को विकसित करने के प्रयास करने की प्रबल अभिप्रेरणा है।

व्यक्तित्व विकास में पर्यावरण की भूमिका

कोई भी विशेषता आनुवंशिकता पर इतना निर्भर नहीं है कि उसे अपने विकास के लिए अल्पमत रूप में पर्यावरणीय दशाओं की आवश्यकता न हो। यह भौतिक विशेषताओं के लिए भी सत्य है और निःसंदेह बौद्धिक, सामाजिक तथा सांवेगिक विशेषताओं के लिए तो और भी अधिक सत्य है। किसी भी दिए गए क्षण में एक व्यक्ति अपनी आनुवंशिक प्रतिभा तथा भौतिक एवं सामाजिक सांस्कृतिक पर्यावरण के मध्य अनगिनत अन्तःक्रियाओं की उत्पत्ति है। भौतिक पर्यावरण से हमारा तात्पर्य व्यक्ति के घेरे रहने वाले प्राकृतिक संसार से है : यथा जलवायु, भूभाग, खाद्य आपूर्ति, रोग, रोगाणु एवं अन्य। सामाजिक सांस्कृतिक पर्यावरण से हमारा तात्पर्य व्यक्तियों, प्रथाओं, मूल्यों तथा मानव निर्मित उद्देश्यों से हैं।

भौतिक पर्यावरण

पृथ्वी पर लोग विभिन्न प्रकार की जलवायु, भूभाग तथा प्राकृतिक संसाधनों के बीच रहते है। कुछ घने जंगलों में रहते हैं और कुछ बंजर रेगिस्तान में रहते हैं, कुछ ऊँचे पर्वतों पर रहते हैं और दूसरे समतल प्रेयरी भूमि पर रहते हैं। कुछ ऐसे स्थानों पर निवास करते हैं जहाँ अत्यधिक ठंड होती है, और दूसरे ऐसे स्थानों पर जहाँ असहय कठोर गर्मी पड़ती है, कुछ ऐसे स्थानों पर निवास करते हैं, जहाँ अधिक समय वर्षा होती है, और दूसरे वहाँ निवास करते हैं जहाँ भयानक सूखा पड़ता है। कुछ स्थानों पर भोजन एवं अन्य संसाधन प्रचुर मात्रा में हैं, तथा कुछ स्थानों पर इतने कम हैं कि अधिकतर संख्या में व्यक्ति का जीवन मुश्किल से जीवन निर्वाह करने में बीतता है। कुछ क्षेत्र रोगों तथा शारीरिक सुरक्षा के संकट से घिरे हैं। तुलनात्मक रूप से कुछ स्थान रोग तथा खतरों से मुक्त हैं।

जलवायु और भूभाग

लोग जो ऐसे क्षेत्रों में निवास करते हैं जहाँ की जलवायु और भूभाग प्रतिकूल हैं उनमें अनुकली दैहिक परिवर्तन की प्रवृत्ति होती है। उदाहरण के लिए एस्कीमों की परिसंचारी व्यवस्था मोटी सुरक्षात्मक कवच के भीतर गहराई में रहती है जो उसके शारीरिक उष्मा को बनाये रखती हैं।

आभाव, रोग और अन्य प्रतिकूल दशाएँ

आज भी करोड़ों लोग ऐसे क्षेत्रों में निवास करते हैं जहाँ रोग फैले हुए हैं और खाद्यान्न की आपूर्ति अपर्याप्त है। ऐसी दशा में आश्चर्यजनक रूप से शारीरिक ओज को कम करती है, क्योंकि विपरीत भौतिक, दशाएँ उस विधि को प्रभावित करती हैं जिसमें एक समूह रहता है तो हम यह मान्यता बना सकते हैं कि वे भी कम से कम अप्रत्यक्ष रूप से कुछ न कुछ प्रत्येक सदस्य के व्यक्तित्व के विकास को प्रभावित करती हैं। फिर भी सुनिश्चित प्रभाव का आँकलन करना कठिन है क्योंकि पुनः हम विशिष्ट रूप से यह पाते हैं कि सांस्कृतिक कारण सम्पूर्ण स्थिति को जटिल बना देते हैं। व्यक्ति पर पड़ने वाले भौतिक पर्यावरण के प्रभाव एवं विकास में समूह की भिन्नता विशिष्टता का मूल्यांकन करना अत्यन्त ही कठिन है। केवल उन दशाओं में जहाँ प्रतिकूल परिस्थितियाँ वास्तव में शारीरिक क्षति पहुंचती है, जैसा कि कुपोषण तथा रोग की दशा में भौतिक पर्यावरण की भूमिका सामाजिक, सांस्कृतिक पयार्वरण की भूमिका से कम महत्वपूर्ण है।

सामाजिक सांस्कृतिक पर्यावरण

लगभग उसी रूप में मनुष्य पैतृक रूप में आनुवंशिकी को प्राप्त करता है जो कि परिणाम है, लाखों वर्षों के विकासवादी इतिहास की उपज का, इसलिए वह ऐसी सामाजिक सांस्कृतिक उद्विकास के कई हजार वर्ष का परिणाम, उपज है। इस पैतृकता में नाटकीय रूप से एक सामाजिक समूह से दूसरे सामाजिक समूह में भिन्नता पायी जाती है पर संसार की समस्त संस्कृतियों में पर्याप्त समानताएँ हैं जो हमे मानव संस्कृति के सम्बन्ध में अर्थपूर्ण ढंग से बोलने हेतु समर्थ बनाती है। उदाहरण के लिए प्रत्येक समूह की अपनी एक भाषा होती है, परिवार एवं सामाजिक संरचना, प्रथाएँ, मूल्य, संगीत तथा कला होती है। ये संस्थाएँ विशेषतामूल मानवीय होती हैं और प्रत्येक समाज में समान साधनों द्वारा संचारित होती हैं। कभी–कभी निर्देश सोचे समझे होते हैं, परन्तु प्रतीत ऐसा होता मानों किंचित प्रायः ये नहीं होते। निम्नलिखित वे प्रमुख साधन हैं जिनके द्वारा सामाजिक, सांस्कृतिक पर्यावरण व्यक्ति के विकास के ऊपर अपने प्रभाव का प्रयोग करता है।

i) समूह सदस्यता तथा अनुदेश

जानबूझ कर और अचेतन दोनों रूपों में प्रत्येक समाज अपनी अवधारणाओं, मूल्यों एवं स्वीकृत व्यवहार की शिक्षा अपने बच्चों को देता है। इस प्रकार के अनुदेश, शिक्षा, उपदेश, सामाजिक संस्थाओं यथा घर, विद्यालय, मन्दिर और उसके समकक्ष द्वारा दिये जाते हैं। इस प्रकार से व्यवस्थित अनुदेश के साथ ही साथ बड़ों द्वारा प्रस्तुत उदाहरण या दूसरे आदर्श कुछ न कुछ सीमा तक एकरूपता लाने का प्रयास करते हैं और विशिष्ट समाज में मूल व्यक्तित्व के प्रकार को स्थापित करने का प्रयास करते हैं।

एक व्यक्ति के मूल व्यक्तित्व की संरचना केवल अपेक्षाकृत अधिक बड़े सामाजिक समूह द्वारा ही नहीं प्रभावित होती है अपितु अनेक उपसमूह, जिसका वह सदस्य हैं, उससे भी प्रभावित होती है जैसे उसके परिवार के सदस्यों, फर्म, पेशे, सामाजिक वर्ग, आयु, एवं लिंग पर आधारित समूह कुछ मूल्यों, विश्वासों तथा अनुमोदित व्यवहार प्रतिमान जो सम्पूर्ण समाज द्वारा लगाए गए प्रतिबन्ध के विषयवस्तु हो सकता है। यह वास्तविकता कि प्रत्येक व्यक्ति कुछ न कुछ भिन्न प्रकार के उपसमूह का सदस्य होता है में वैयक्तिक भिन्नता उत्पन्न करने की प्रवृत्ति होती है ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार अपेक्षाकृत बड़े सांस्कृति की सामान्य सदस्यता कमोवेश प्रत्येक को समान बनाती है।

समूह जिससे एक व्यक्ति तादात्मीकरण स्थापित करता है या जिस समूह से वह अपनी पहचान स्थापित करना चाहेगा उसे 'संदर्भ समूह' कहते हैं, क्योंकि उसकी समूह के

पहचान स्थापित करना चाहेगा उसे 'संदर्भ समूह' कहते हैं, क्योंकि उसकी समूह के प्रतिमानों तथा मूल्यों के सदर्भ में वह अपने लक्ष्य, व्यवहार का स्वरूप तैयार करता है और अपनी योग्यता का मूल्यांकन करता है।

कभी–कभी संदर्भ समूह जिससे व्यक्ति पृथक किया गया है वह व्यक्ति के ऊपर अपेक्षाकृत अधिक प्रभाव रखते हैं।

ii) स्तर और भूमिका

प्रत्येक समाज संरचना में अध्यापक, तिरखान या खाती माता–पिता, विद्यार्थी, बच्चे सभी लोग किसी न किसी रूप में अपना योगदान देते हैं। प्रस्थिति के साथ विशेषाधिकार एवं उत्तरदायित्व दोनों जुड़े हैं। उदाहरणार्थ चिकित्सक को औषध में पेशा (व्यवहार) करने का विशेषाधिकार है और उसे समाज के अन्य सदस्यों द्वारा उच्च सम्मान, अधिकार दिया जाता है। इस के प्रतिफल (बदले) में उसे उससे वृत्ति की नैतिक संहिता का अनुकरण करने की अपेक्षा की जाती है। यदि वह ऐसा करने में असफल होता है तो उसका चिकित्सकीय अनुज्ञापन रद्द किया जा सकता है तथा उसे अधोवर्ती सामाजिक श्रेणी (स्थिति) में रखा जा सकता है।

किसी व्यक्ति को प्रदत्त सामाजिक स्थिति एवं प्रस्थिति से सम्बन्धित अपेक्षाओं को स्पष्ट करने के लिए समाज अपने सदस्यों को सम्पादित करने के लिए अनेक भूमिकाएँ निर्धारित करती हैं। प्रत्येक एक निश्चित प्रकार के अपेक्षित व्यवहार से जुड़ा हुआ है। एक सैन्य अधिकारी की भूमिका निष्ठा, कृतसंकल्पता, साहस तथा संसाधन सम्पन्नता की माँग करती है। समाज का प्रत्येक व्यक्ति, युवा या वृद्ध, उस कौशल, व्यवहार तथा मूल्यों को विकसित करने की ओर अभिमुख होता है, जो उसकी भूमिका की माँग होती है। जो उससे अपेक्षा की जाती है यदि उससे अत्यधिक अपेक्षा की जाती है तो उसके सामाजिक सम्बन्धों को कठिनाई में पड़ने की सम्भावना रहती है।

न्यू गयाना के चम्बुली आदिवासी (1949) में मार्गरेट मीड्स द्वारा किये गये अध्ययन में भलीभांति सोदाहरण दिया गया है कि किस सीमा तक भूमिका की अपेक्षाएँ व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करती है। इनमें स्त्रियों से जीविकोपार्जन, व्यापारिक लेन–देन, प्रणय निवेदन में पहल करने की अपेक्षा की जाती है। दूसरी तरफ पुरुषों से अपेक्षा की जाती है कि नखरेबाज, मनोहर, गपशप करने में प्रवीण हों तथा अच्छे गृह निर्माणकर्ता हों तथा नृत्य करने एवं नाटक करने में उन की रुचि हो। (चाम्बुलियों में स्त्रियों तथा पुरूषों में स्थापित भूमिका स्पष्ट रूप से व्यक्तित्व विकास को उस मार्ग की ओर ले जाती है जो हमारी संस्कृति से अधिक भिन्न है।)

iii) अन्तरपरस्पर सम्बन्ध

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और अधिकतर उसके व्यक्तित्व का विकास दूसरे व्यक्तियों के साथ उसके सम्बन्धों को प्रतिबिंम्बित होता है। अनेक समाजों में एक निश्चित प्रकार के अन्तरपरस्पर सम्बन्ध दूसरे पर आधिपत्य रख सकते हैं, उदाहरणार्थ प्रतिमान संघर्ष या सहयोग, शत्रुता या मित्रता हेतु हो सकते हैं। फिर भी सामान्यतः अन्तरपरस्पर सम्बन्ध बजाय विकास की समानता की अपेक्षा वैयक्तिकता को अधिक योगदान देते हैं, क्योंकि हममें से किसी भी दो का न तो पूर्णरूप से वही परिचय है और न तो उन लोगों से जिन्हें हम सामान्यतः जानते हैं, उनसे समान सम्बन्ध है। यहाँ तक कि माता–पिता अपने प्रत्येक बच्चों से किसी न किसी रूप में भिन्न प्रकार से सम्बन्ध रखते हैं। प्रेम एवं घृणा, मित्रता एवं अविश्वास के अनुभव, आपस में बंटे हुए अनुभव तथा गलतफहमियाँ जो दूसरे लोगों के साथ हमारे सम्बन्धों का चरित्र चित्रण करते हैं, प्रत्येक दशा में एक दूसरे से भिन्न होते हैं।

यद्यपि हमारे जीवनक्रम में अनेक प्रकार के अन्तरपरस्पर सम्बन्ध होते हैं, वे जो हमारे विकास को स्वरूप प्रदान करने में सर्वाधिक प्रभाव डालते हैं, जैसे हमारे माता–पिता तथा अपने समकक्ष समूह। इसके अतिरिक्त अन्तरपरस्पर सम्बन्धों के अन्य बहुत से दूसरे प्रकार यथा भाई–बहन, पितामह, शिक्षक, पड़ोसी, व्यक्तित्व को स्वरूप प्रदान करने में सार्थक भूमिका निभा सकते हैं, यहाँ तब कि किसी के साथ आकस्मिक भेंट हमारे जीवन की दिशा परिवर्तित कर सकती है।

व्यक्तित्व विकास में सीखने की भूमिका

सीखने के विभिन्न स्वरूपों में, विशेष रूप से अनुकूलन, अनुसरण तथा दूसरे के निर्देशन तथा मार्गदर्शन में शिक्षण प्रशिक्षण की व्यक्तित्व के स्वरूप के विकास में प्रमुख भूमिका रहती है।

स्वयं के प्रति व्यक्ति की मनोवृत्ति, स्थितियों, लोगों के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त करने की विशिष्ट विधि, समाज द्वारा अनुमोदित भूमिकाओं की मान्यताओं के प्रति मनोवृत्ति, एवं सामाजिक समायोजन की विभिन्न विधियाँ, पुनरावृत्ति द्वारा सीखी जाती हैं और इनके द्वारा मिलने वाले संतोष द्वारा प्रबलित की जाती हैं। शनै–शनै स्व–धारणा विकसित होती है, सीखी हुई प्रतिक्रियाएँ सामान्य हो जाती हैं, तथा व्यक्ति के व्यक्तित्व की रचना में "विशेषताओं" को संस्थापित करती हैं।

घर के भीतर एवं वाह्य सामाजिक दबाव यह निर्धारित करते हैं कि किस प्रकार की विशेषताएँ रचना में समाविष्ट (सम्मिलित) की जाएगी। उदाहरण के लिए यदि एक बालक

को आक्रामक बनने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, क्योंकि आक्रामकता पुरुषों के लिए उचित यौन सम्बन्धी विशेषता मानी जाती है, तो वह लोगों तथा वस्तुओं के प्रति आक्रामक रूप में प्रतिक्रिया करना सीखेगा। यदि दूसरी तरफ आक्रामकता को सामाजिक अस्वीकृति प्राप्त होती है या संतोष नहीं अर्जित करती हैं, तो व्यक्ति समायोजन की अन्य दूसरी विधियों का प्रयोग करेगा जब तक कि वह किसी ऐसी विधि से प्राप्त नहीं होती जो उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करती हो। वह इसकी तब तक पुनरावृत्ति करेगा जब तक कि यह उसके व्यवहार का सामान्य स्वरूप नहीं ले लेता।

यह जानते हुए कि व्यक्तित्व के स्वरूप के विकास में सीखना एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है, दो कारणों से महत्वपूर्ण है। प्रथम यह हमें यह बताता कि नियंत्रण का प्रयोग यह सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है कि व्यक्ति के व्यक्तित्व, उनके स्वरूप का इस प्रकार, विकास होगा जो उसे एक अच्छे व्यक्तिगत एवं सामाजिक समायोजन की दिशा में ले जायेगा।

दूसरी तफर यह हमें यह बताता है कि अस्वस्थ स्व धारणाएँ तथा सामाजिक रूप से अस्वीकार प्रतिमान परिवर्तित तथा संशोधित किए जा सकते हैं। जैसा कि सभी प्रकार के सीखने में जितना ही शीघ्र परिवर्तन तथा संशोधन का प्रयास किया जाता है, उतना ही इसमें सुगमता होती है।

सामाजीकरण की प्रक्रिया तथा व्यक्तित्व विकास में समाजीकरण की भूमिका

मानव व्यक्तित्व के विकास में समाजीकरण की भूमिका को अन्ना तथा इसाबेला के केस का उदाहरण देकर दर्शाया जा सकता है। एक अवैध संतान अन्ना को अकेले एकान्त में सीढ़ीयों के ऊपर एक कमरे में रख दिया गया था। लगभग 6 वर्ष की आयु में जब से उस कमरे से हटाया गया तो अन्ना बात नहीं कर सकती थी, चल नहीं सकती थी या कोई भी ऐसा कार्य नहीं कर सकती थी जो बुद्धिमता को प्रदर्शित करता। वह भावविहीन थी तथा प्रत्येक चीज के प्रति उदासीन थी। वह अपनी इच्छा से किसी भी प्रकार की कोई हरकत नहीं करती थी। यह प्रदर्शित करता है कि सामाजीकरण के अभाव में विशुद्ध रूप से जैवकीय संसाधन इतना दुर्बल है कि यह सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में योगदान नहीं दे सकता। अभिव्यक्तिशील सम्पर्क सामाजीकरण का अभ्यन्तर (हृदय) है।

इसावेल साढ़े छः वर्ष की आयु में पायी गयी थी। अन्ना की तरह वह भी एक अवैध सन्तान थी और इस कारण से एकाकीपन में रखी गयी थी। जब उसे पाया गया तब

समाजीकरण की सहायक संस्थाएँ

ऊपर वर्णित समस्त संस्थाएँ समाजीकरण की प्राथमिक संस्थाएँ हैं। समाजीकरण की कुछ अन्य संस्थाएँ भी हैं जो समाजीकरण की सहायक संस्थाओं के रूप में जानी जाती हैं।

i) धर्म

धर्म समाज में एक महत्वपूर्ण कारक है। समाजों के प्रारम्भिक इतिहास में धर्म समाज को एकता के सूत्र में बांधता था। यद्यपि आधुनिक समाज में धर्म के महत्व का ह्रास हुआ है। फिर भी यह हमारे विश्वास तथा जीवन शैली को दिशा देता है। शिशु अपने माता–पिता को मन्दिर जाने और धार्मिक क्रिया करते हुए देखता है और धर्मोपदेश को सुनता है जो उसके जीवन की धारा को निर्धारित करती है और उसके विचारों को स्वरूप प्रदान करती हैं।

ii) राज्य

राज्य सामाजीकरण की सत्तावादी संस्था है। यह लोगों के लिए कानून बनाता है और उन से अपेक्षित आचार व्यवहार की विधि निर्धारित करता है। यदि वे राज्य के कानून के अनुरूप अपने व्यवहार को अनुकूलन करने में असमर्थ हैं तो उन्हें इस असफलता के लिए दण्डित किया जा सकता है। इस प्रकार राज्य एक व्यक्ति के व्यवहार एवं व्यक्तित्व को नियंत्रित करता है।

आनुवंशिकता एवं पर्यावरण का तुलनात्मक महत्व

आज पर्याप्त प्रमाण हैं कि एक शिशु के व्यक्तित्व का स्वरूप क्या होगा यह केवल प्रशिक्षण की विधि या उस पर्यावरण, जिसमें व्यक्ति विकसित होता है पर ही निर्भर नहीं करता अपितु व्यक्ति द्वारा अपने साथ लायी जाने वाली अनुवांशिक अन्तः शक्ति पर भी निर्भर करता है।

आनुवंशिकता एवं पर्यावरण की अन्तःक्रिया को प्रभावित करने वाली दशाएँ :

जन्म के समय एक व्यक्ति की अन्तःक्रिया दूसरे लोगों को प्रभावित करती है और अन्तशक्ति स्वयं भी जीवन की प्रारम्भिक अव्यवस्थाओं से प्रभावित होती है। दूसरे महत्वपूर्ण लोगों के साथ उस के सम्बन्धों से प्रभावित होती है। इस प्रकार व्यक्तित्व के प्रतिमान का गठन जैसा कि पहले माना जाता था, उससे अधिक जटिल प्रक्रिया है और अन्य बहुत से तत्व अन्तर्निहित हैं जो सत्य होते यदि नवजात शिशु "मात्र जीवनद्रव्य का आदिरूप होता है।"

विकास जैविक संरचना एवं अन्य अन्तःशक्तियों का दूसरे सार्थकों के साथ अन्तःक्रिया का कार्य है। इस अन्तःक्रिया में महत्वपूर्ण व्यक्ति शिशु की व्यक्तित्व को संस्कृति द्वारा अनुमोदित स्वरूप प्रदान करने का प्रयास करते हैं। वे किस प्रकार शिशु की मूलभूत प्रेरणाओं को संचालित करते हैं यह निर्धारित करता है कि शिशु का किस प्रकार का व्यक्ति होगा। माता–पिता, भाई–बहनों, समआयु के लोगों, सम्बन्धियों तथा अन्य लोगों का शिशु के साथ आचार–व्यवहार क्या होगा, यह भी अन्तःक्रिया के स्वरूप को प्रभावित करता है और इस प्रकार व्यक्तित्व की संरचना को प्रभावित करता है। एक शिशु जिसने परिवार में आक्रामक होना सीखा है, वह घर के बाहर लोगों के साथ आक्रामकता की विशषताओं को समाहित करने वाले व्यवहार को प्रेरित करेगा। इसके विपरीत ऐसे परिवार में जहां आक्रमण को न्यून स्थान प्राप्त है वहाँ वह बाहरी व्यक्तियों के साथ मैत्रीपूर्ण, सहयोगात्मक अन्तःक्रिया रखेगा।

आनुवंशिकता तथा पर्यावरण का तुलनात्मक महत्व

व्यक्तित्व की संरचना के गठन में अनुवंशिकता तथा पर्यावरण के तुलनात्मक महत्व कम से कम तीन चरों–विशेषता जो प्रभावित होती है। विकसित होने वाली विशेषताओं को प्रभावित करने वाले पर्यावरण का स्वरूप, एवं पर्यावरण की शक्तियों का क्षेत्र एवं गहनता। कुछ विशेषताएँ तुलनात्मक रूप से स्थिर हैं। उनमें पर्यावरण के किसी भी प्रकार के प्रभाव के बावजूद भी कोई भी किंचित परिवर्तन नहीं होता। अन्य दूसरे अस्थिर हैं और आसानी से पर्यावरण की दशाओं से प्रभावित होते हैं।

यहाँ तक कि कुछ लोगों में वही विशेषताएँ मुख्य रूप से आनुवंशिक दशाओं के परिणाम हो सकती हैं जबकि दूसरों में यह पर्यावरण की दशाओं की उत्पत्ति हैं। उदाहरणार्थ एक व्यक्ति जन्मजात स्वभाव के कारण एकान्तवासी संकोची हो सकता है जबकि दूसरा पर्यावरण के साथ संघर्ष के कारण ऐसा हो सकता है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि कुछ विशेषताओं में आनुवंशिकता से प्रशिक्षण महत्वपूर्ण होता है जबकि दूसरे में इसके विपरीत सत्य होता है। फिर भी सामान्यतः जितना अधिक एक विशेषता संरचनात्मक वंशानुक्रम से सम्बन्ध है उतना ही कम यह पर्यावरण के प्रभाव से संशोधित की जा सकती है। उसी प्रकार पर्यावरण के प्रकार तथा उसके प्रभाव की गहनता विभिन्न प्रकार की विशेषताओं में परिवर्तन की मात्रा को प्रभावित करती है। पर्यावरण का प्रभाव दैहिक, बौद्धिक या सांवेगिक है। यह इस बात का निर्धारण करेगा कि कहां तक ये विभिन्न विशेषताओं को परिवर्तित कर सकती हैं। संरचनात्मक विशेषताएँ अधिक स्थायी हैं अपेक्षाकृत उन विशेषताओं के जिनका स्वरूप अधिक कार्यात्मक है।

आनुवंशिकता तथा पर्यावरण के तुलनात्मक महत्व को जानने की उपयोगिता

आनुवंशिकता एवं पर्यावरण में से किसकी भूमिका अधिक महत्वपूर्ण है, इस प्रश्न का उत्तर एक शब्द में नहीं दिया जा सकता। व्यक्तित्व की रचना के कुछ पक्षों के लिए आनुवंशिकता अधिक महत्वपूर्ण है और कुछ के लिए पर्यावरण। दोनों का संयुक्त प्रभाव निर्णायक है न कि उनका पृथक प्रभाव।

व्यावहारिक तथा सैद्धान्तिक कारणों से यह अत्यधिक उपयोगी होगा कि यह निर्धारण करने के योग्य बनने के लिए कि कौन सा प्रभाव अधिक प्रभावशाली होगा। इस प्रकार के ज्ञान के एक व्यावहारिक उपयोग का जर्सील्ड द्वारा दिया गया सुझाव यह है कि "यदि बच्चे अपने अन्तर्जात विशेषताओं के कारण अतिसंवेदनशीलता ताकी ठेस पहुंचाने, विचलित होने, झुकने, या अवज्ञाकारी होने, लज्जित करने, पीड़ा एवं कुंठा को अधिक या कम सहने की प्रवृत्ति में एक दूसरे से पृथक हैं तो हम यह मान्यता बना सकते हैं कि वे न्यूराटिक या स्वस्थ मस्तिष्क युक्त व्यक्ति के रूप में विकसित होने की अपनी अन्तर्जात प्रवृत्तियों में भिन्न हैं।"

व्यक्ति पर दोनों प्रकार के प्रभावों का तुलनात्मक महत्व एक बार या सदा के लिए नहीं निर्धारित किया जा सकता है क्योंकि वे एक दूसरे को उनके प्रभाव में प्रबलित कर सकते हैं या उनमें संघर्ष हो सकता है। पर्यावरण का प्रभाव केवल पर्यावरण पर ही नहीं अपितु व्यक्ति के अनुवांशिक प्रतिभा पर निर्भर करता है।

व्यक्तित्व का गठन

यह विश्वास नवीन नहीं है कि व्यक्तित्व के स्वरूप का निर्माण जीवन के प्रारम्भ में होता है। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में फ्रायड ने प्रौढ़ावस्था में व्यक्तित्व का स्वरूप किस प्रकार होगा, इस का निर्धारण करने के लिए जीवन की प्रारम्भिक अवस्था को महत्व दिया। उनका सिद्धान्त इस साक्ष्य पर आधारित था कि व्यक्तित्व में विघ्न से पीड़ित उसके कई रोगियों के बाल्यावस्था के अनुभव दुखद थे। फ्रायड ने अभिधारणा की कि, ये दुखद अनुभव उनके कुछ नैसर्गिक मनोवेग के कुण्ठा से आये।

बारटीमेयर ने बताया कि प्रारम्भ के प्रतिकूल अनुभव व्यक्तित्व पर गम्भीर प्रभाव डालते हैं क्योंकि व्यक्तित्व का स्वरूप उस समय पूर्ण रूप से बाद की अपेक्षा पूर्णरूप से कम संगठित होता है। इसे ध्यान में रखना चाहिए कि प्रारम्भिक अनुभवों से होने वाली हानि आवश्यक रूप से स्थायी नहीं होती।

रचना, पहले प्रारम्भ क्यों शुरू होती है

व्यक्तित्व के स्वरूप की रचना जन्म के पश्चात के प्रारम्भिक काल में प्रारम्भ होती है क्योंकि सीखने की क्षमता प्रारम्भ में विकसित होती है और शिशु के प्रथम जन्मदिन तक पहुँचने के पूर्व ही क्रियाशील होने के लिए तैयार हो जाती है। जीवन के प्रारम्भिक काल में क्या होता है, विकास की ओर अग्रसर शिशु किस प्रकार के सम्पर्क में है। वे उससे क्या अपेक्षा करते हैं तथा किस प्रकार वे अपनी आपेक्षाओं को प्रवर्तित करने का प्रयास करते हैं–सभी विकासोन्मुक व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं और निर्धारित करते हैं कि किस प्रकार के व्यक्तित्व के रूप में वह विकसित होगा।

व्यक्तित्व के स्वरूप की रचना किस प्रकार होती है

सांस्कृतिक समूह, अनुमोदित मौलिक व्यक्तित्व के स्वरूप को निर्धारित करता है और समूह के प्रत्येक सदस्य से इसके अनुसार चलने की अपेक्षा करता है। व्यक्ति जिस संस्कृति में रहता है उसके साथ अन्तःक्रिया द्वारा व्यक्तित्व को एक स्वरूप आकार प्रदान किया जाता है तथा उसमें परिवर्तन लाया जाता है। उस संस्कृति में जिसमें मूल्य तुलनात्मक रूप से स्थिर है अनुमोदित बुनियादी व्यक्त्वि का स्वरूप उसी प्रकार अपेक्षाकृत स्थिर हैं। जहां मूल्यों में प्रायः मूलतः परिवर्तन होते हैं वहां भी अनुमोदित मूल व्यक्तित्व में परिवर्तन होते हैं। वास्तव में इस का अर्थ सम्पूर्ण स्वरूप में परिवर्तन नहीं है अपितु इसके कुछ पक्षों में।

गठन के स्रोत

व्यक्तित्व के गठन में अभिवृत्तियां, अनुभूतियां, तथा युवाओं के व्यवहार प्रतिमान को सर्वप्रथम परिवार में तथा कालान्तर में उन्हें विद्यालय में, सम आयु के समूहों में और विस्तृत रूप से समुदाय में गठन होता है।

परिवार, शिशु सर्वप्रथम सामाजिक पर्यावरण तथा सामाजिक समूह के रूप में जिससे उसका बहुधा तथा घनिष्टतम सम्बन्ध रहता है, व्यक्तित्व गठन की सबसे अधिक महत्वपूर्ण संस्था है। घर, विद्यालय, शिक्षक, समआयु समूह, माध्यम, धर्म, पेशा आदि कुछ अन्य महत्वपूर्ण साधन हैं।

गठन की तकनीक

संस्कृति द्वारा स्वीकृत आदर्शों के साथ चलने के लिए व्यक्तित्व के स्वरूप के गठन के लिए सीखने की दो प्रमुख विधियाँ हैः प्रथम दूसरों द्वारा व्यवहार के मार्गदर्शन एवं नियंत्रण के माध्यम से सीखना, एवं दूसरा, दूसरों के विश्वास, आचार, व्यवहार के स्वरूप से सीखना। प्रथम सीखने की वाह्य निर्देशित विधि है और सामान्यतः "शिशु प्रशिक्षण" के रूप में

उल्लेखित है। दूसरा, स्व अनुकर्णित अथवा आन्तरिक निर्देशित है और "तादात्मीकरण" के नाम से जानी जाती है।

यह कहना असम्भव है कि इनमें से कौन व्यक्तित्व के स्वरूप के गठन में अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

सीखने की दोनों प्रकार की विधियों की तुलनात्मक प्रभावोत्पादकता एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में, एक आयु वर्ग से दूसरी आयु में भिन्न होती है। इसके अतिरिक्त जैसा कि कहा गया है कोई भी दो व्यक्ति एक समान प्रतिक्रिया नहीं करते।

सारांश

इस अध्याय में हमने व्यक्तित्व के निर्धारकों की व्याख्या की है। व्यक्ति गठन से सम्बन्धित संक्षिप्त विचार भी दिए गए हैं।

व्यक्तित्व का विकास अनेक कारकों पर निर्भर करता है। आनुवंशिकता, पर्यावरण, सीखना तथा समाजीकरण की प्रक्रिया व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण निर्धारक हैं। जननिक आधार की आनुवंशिकता व्यक्तित्व का एक बहुत ही महत्वपूर्ण निर्धारक है क्योंकि व्यक्तित्व का प्रमुख कच्चामाल शारीरिक संरचना, बुद्धि एवं स्वभाव अत्यधिक सीमा तक व्यक्ति की आनुवंशिक प्रतिभा पर निर्भर करते हैं। पर्यावरण भी व्यक्तित्व विकास का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है। भौतिक, पर्यावरण, जलवायु एवं भू–भाग उन महत्वपूर्ण कारकों में से है जो किसी के व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करते हैं।

व्यक्तित्व विकास में सीखने की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह दो कारणों से महत्वपूर्ण है। प्रथम, यह हमें बताती है कि नियंत्रण यह सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है कि एक व्यक्ति इस प्रकार के व्यक्तित्व के स्वरूप को विकसित करेगा जो उसे एक अच्छे व्यक्तिगत तथा सामाजिक समायोजन की ओर ले जा सके। दूसरे हमें बताता है कि अस्वस्थ समाज द्वारा अस्वीकृत समायोजन के स्वरूप को परिवर्तित तथा संशोधित किया जा सकता है।

व्यक्तित्व विकास के लिए एक व्यक्ति का समाजीकरण बहुत महत्वपूर्ण है। समाजीकरण की संस्थाएँ जैसे कि परिवार, पड़ोस, समआयु समूह, विद्यालय, धर्म, राज्य एवं अन्य एक व्यक्ति के स्वस्थ व्यक्तित्व विकास में सहायक होती हैं।

प्रश्न यह कि व्यक्तित्व विकास में कौन सी संस्था, आनुवंशिकता या पर्यावरण, अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, आज तक अतुन्तरित रहा है। इस बात के प्रमाण है कि व्यक्तित्व के स्वरूप के कुछ क्षेत्र में आनुवंशिकता,अधिक महत्वपूर्ण है–जबकि पर्यावरण दूसरे में, अधिक महत्वपूर्ण है। वास्तव में दोनों संयुक्त रूप में व्यक्तित्व की संरचना करते हैं।

अध्ययन इस बात को दर्शातें हैं कि व्यक्ति का गठन जीवन के प्रारम्भ में शुरू होता है और यह कि प्रारम्भिक वर्ष संकटपूर्ण विवेचनात्मक होते हैं। एक बार जब आधारशिला रख दी जाती है तो पर्यावरण के प्रभाव का महत्व प्रत्येक बीतने वाले वर्ष के साथ कम हो जाता है। व्यक्तित्व गठन के पर्यावरणीय स्रोत में परिवार, विद्यालय, समआयु के साथी, समूह, जनसमूह, धर्म एवं पेशा आते हैं। गठन के इन स्रोतों का तुलनात्मक महत्व एक समूह से दूसरे समूह तथा एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति से में भिन्न होता है।

व्यक्तित्व गठन के लिए दो प्रकार का सीखना उत्तरदायी है। प्रथम वाह्य निर्देशित सीखना है और इसे शिशु के पालन पोषण के नाम से जाना जाता है। दूसरा आन्तरिक निर्देशित है और इसे तादात्मीकरण कहते हैं।

कुछ उपयोगी पुस्तकें

आलपोर्ट, गार्डन, डब्ल्यू, पैटर्न एण्ड ग्रोथ इन पर्सनाल्टी न्यूयार्क, होल्ट, रिनहार्ट एण्ड विन्सडन।

कोलमैन, पर्सनाल्टी डायनमिक्स एण्ड इफेक्टिव विहैवियर।

हाल एण्ड लिण्डजे, थ्योरीज ऑफ पर्सनालिटी, विले ईस्टर्न।

हर्लाक, ई.बी., पर्सनाल्टी डेवलपमेंट, टाटा मैक्ग्राहिल पब्लिसिंग कम्पनी लि.।